शिक्षाका माध्यम

रजि० नं० बी ४४५८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ — सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला — अंक १२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २३ मअी, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

राजाजी

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी हिन्दुस्तानी संघके दूसरे गवर्नर जनरल नियुक्त किये गये हैं। अिस नियुक्तिसे शायद ही किसीको ताज्जुब हुआ हो, हालाँकि सारे हिन्दुस्तानका, जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है, अिस पर बहुत बड़ा सन्तोष जाहिर करना अुचित ही है। अुनकी साफ़ बुद्धि, किसी भी तरहकी अनुदारतासे मुक्त रहनेका अुनका गुण, दबे और कुचले हुअे लोगोंके प्रति अुनकी हमदर्दी, सारी जातियों, वर्गों और दोनों अुपनिवेशोंमें मेलमिलाप और दोस्ती बढ़ानेका अुनका निश्चय, और अुनका राजनीतिक विवेक नये विधानके मुताबिक बननेवाली हिन्द सरकारका बहुत बड़ा बल साबित होगा। हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरलके नाते अुनका 'चक्रवर्ती राजाजी' नाम पूरी तरह सार्थक मालूम होता है। भगवान अुन्हें हिन्दुस्तानको अपने ध्येय तक ले जानेकी शक्ति और अुत्साह दे!

बम्बअी, १४–५–'४८

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल मशरूवाला

राजघाटपर श्री विनोबाका भाषण

(५)*

आजका दिन गांधीजीके महाप्रयाणका दिन है। अुनकी मृत्युको आज तीन महीने पूरे होते हैं। महापुरुषोंका जीवन और मरण दोनों अेक ही मतलब रखते हैं। जब वे शरीरमें रहते हैं, तब भी शरीरसे परे होते हैं। अुनका जीवन विचारमय होता है। जब शरीर छूट जाता है, तब अुपाधि छूट जानेके कारण विचारका जोर बढ़ता है और सबको धक्के देने लगता है। मुझे तो अिसका निरन्तर अनुभव होता है। अुस स्मरणसे आत्म-परीक्षणके लिअे स्फूर्ति मिलती है, और नित्य निरीक्षण होता रहता है। अुस स्फूर्तिको लेकर हमें तो अपने सामने जो सेवा पड़ी है, अुसे करते रहना चाहिये, और बार बार यह देखना चाहिये कि अुसमें कहाँ तक प्रगति हुअी है।

पिछले वक्त शरणार्थियोंके प्रश्नकी ओर मैंने आपका ध्यान खींचा था। आज भी अुसी विषयपर बोलना चाहता हूँ। चार हफ्ते पहले मैं शरणार्थी कैम्पोंको देखने गया था। तब पानीपतमें मैंने बिलकुल ही छोटे छोटे तम्बू देखे थे, जिनका जिक्र मैंने अपने पिछले भाषणमें किया था। अभी वृद्धिया गया था, जहाँ मुकामी मुसलमानोंको बसानेका सवाल है। रास्ता पानीपत परसे ही था। तब मैंने देखा कि वे छोटे छोटे तम्बू आज भी वैसे ही हैं, जैसे चार हफ्ते पहले थे। पानीपतका नाम तो मैंने अुदाहरणके तौरपर लिया है। अैसे छोटे तम्बू कअी जगह हैं। अुन्हें फौरन हटा देनेका अुस समय तय हुआ था। लेकिन तीन चार हफ्ते बीतनेपर भी अुन्हें नहीं हटाया जा सका है। दिन बदिन सूरजका ताप बढ़ता जा रहा है। जब मैं यह सोचता हूँ कि अुन तम्बुओंके भीतर बच्चोंकी क्या हालत होगी, तो मुझे चूल्हेपर अुबालनेके लिअे रखे हुअे आलुओंकी मिसाल याद आती है। अुनके दुःखोंका अधिक वर्णन करके मैं अपनी वाणीको श्रम नहीं देना चाहता। आपके भी बाल-बच्चे हैं। आप थोड़ेमें सब समझ सकते हैं। यह काम जल्दी नहीं हो रहा है, अिसके लिअे मैं किसीको दोष नहीं देना चाहता। क्योंकि जिस किसीको मैं दोष दूँगा, वह मेरा ही रूप होगा। अिसलिअे अगर मैं दोष देखना चाहूँ, तो अपना ही देखना चाहूँगा।

अिस समय मैं कांग्रेस कार्यकर्ताओंका अिस प्रश्नपर विशेष ध्यान खींचना चाहता हूँ। गांधीजीने देशके सामने रचनात्मक कार्यक्रम रखा और बार-बार अुसपर जोर दिया। शरणार्थियोंकी सेवा सारे रचनात्मक कामोंमें शिरोमणि है। रचनात्मक कामोंके जितने पहलू हैं, अुन सबका अुपयोग अिसमें होता है। सब अिसमें आ जाते हैं। अिस कामके लिअे कांग्रेसकी अेक शरणार्थी-सेवा-समिति है। लेकिन अुसपर सब कुछ नहीं छोड़ना चाहिये। यह सबका काम है। हरअेक कार्यकर्ताको अिसमें योग देना चाहिये। घरघर जाकर लोगोंको समझाना चाहिये। क्या कोअी अपने घरमें किसी शरणार्थीको रख सकता है, यह देखना चाहिये।

लेकिन अब तक कांग्रेसवालोंको रचनात्मक कामोंमें दिलचस्पी कम रही। अब तक जो हुआ सो हुआ, लेकिन आगे अैसा नहीं होना चाहिये। अब तकके लिअे क्षमा भी हो सकती है। क्योंकि अभी तक देशके सामने मुख्य सवाल था — अंग्रेजोंको यहाँसे निकालना। जो लोग रचनात्मक काम करते थे, अुनकी भी नजर अुसी सवालपर लगी रहती थी। लोगोंको यही समझाना पड़ता था कि अंग्रेजोंको निकालनेमें रचनात्मक कामोंकी कैसी मदद हो सकती है। अुससे हमें जनतामें पहुँचनेका मौका मिलता है, वह जाग्रत होकर संगठित होती है, और फिर देशमें अैसी शक्ति पैदा होती है, जिससे राजनीतिक काममें काफी मदद मिलती है," अिस तरह लोगोंको समझाकर हम रचनात्मक कामोंको आगे बढ़ानेकी कोशिश करते रहे। अिस ढंगसे कुछ काम तो चला, लेकिन कांग्रेसवालोंको अुसमें दिलचस्पी नहीं रही।

अब तो अंग्रेज चले गये। अब रचनात्मक कार्यक्रमका ही अवसर आया है, क्योंकि हमें राष्ट्रका निर्माण करना है। हरअेक कामके दो पहलू होते हैं। अेक होता है, असद् वृत्तिका विनाश; और दूसरा होता है, सद्वृत्तिका विकास। दोनोंकी जरूरत होती है। लेकिन विकासकी तरफ ध्यान देनेका अवसर आनेपर भी अगर सिर्फ़ विनाशके पहलूपर ही ध्यान रहा, और विकासके काममें दिलचस्पी न रही, तो, जैसा कि अुपनिषदोंने कहा है, मनुष्य अँधेरेमें प्रवेश करता है। अुन दिनों विनाशके कार्यक्रमकी बात थी, तो अुसमें त्याग भी करना पड़ता था, तरह तरहकी मुसीबतें भी अुठानी पड़ती थीं। अब तो वह बात नहीं रही। अैसी हालतमें अगर वही मनोवृत्ति रही, तो कार्यकर्ताओंमें भोगपरायणता आयेगी, जिससे कांग्रेस निकम्मी बन जायगी। लेकिन आज अगर वे शरणार्थियोंका काम हाथमें ले लेते हैं, तो कांग्रेसको परिश्रम करनेका

* ३०–४–'४८ शुक्रवारको राजघाट (दिल्ली) पर दिया हुआ विनोबाजीका भाषण।

www.vinoba.in

मौका मिलेगा और जनतासे अुसका सम्पर्क बढ़ेगा । आज तो कांग्रेस-वालोंका जनतासे सम्पर्क भी कम हो रहा है । समाजवादी कांग्रेससे निकल गये हैं । दूसरे नौजवान असन्तुष्ट हैं । बाकी लोगोंमेंसे कुछ सरकारमें मिल गये हैं, और कुछ सत्तापरायण बन गये हैं । अगर सत्तापरायण वृत्ति ही बनी रही, तो कांग्रेसवाले आपसमें लड़ते रहेंगे, पक्ष-अुपपक्ष बढ़ेंगे और कांग्रेस निस्तेज हो जायगी । अुससे तो कांग्रेसको आज ही खतम कर देना अच्छा, ताकि कमसे कम अुसका अच्छा स्मरण तो बना रहे । अगर भोगवृत्तिसे, आलस्यसे अुसके तेजको क्षीण होने देंगे, तो अुसका अच्छा स्मरण भी दूषित हो जायगा ।

अिसलिअे कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे मेरी प्रार्थना है कि वे शरणार्थियोंके कामको हाथमें लें । अुससे अुनकी चित्तशुद्धि होगी और दुःखी भाअियोंको मौकेपर मदद मिल जायगी । दुःखके समय देशने अुन्हें मदद दी, अिस बातसे अुनके दिलमें देशके प्रति अुपकारबुद्धि और प्रेम रहेगा । और आगे चलकर अुनमेंसे भी अच्छे देशसेवक पैदा होंगे । बाकीके सब काम जरा अलग रखकर अिस समय अगर हम अिसी काममें लग जायँ, तो कोअी नुकसान न होगा । बल्कि दूसरे सारे काम अिसमें चरितार्थ होंगे । जैसे समुद्रस्नानमें सारी नदियोंके स्नानका पुण्य मिल जाता है, वैसी ही यह बात है ।

द० दा०

मध्यप्रान्तकी अछूती छत्तीसगढ़की रियासतें

मध्यप्रान्तके प्रधान मन्त्री श्री रविशंकर शुक्ल और आदिवासियोंके कल्याणसे सम्बन्ध रखनेवाले महकमेके मन्त्री डॉ० डबल्यू० अेस० बारलिंगेके कहनेसे हालमें ही मध्यप्रान्तमें मिलनेवाली छत्तीसगढ़की कुछ रियासतोंका दौरा करके मुझे बड़ी खुशी हुअी । मेरे साथ मेरे दोस्त और साथी श्री पी० जी० वनिकर भी थे, जो मध्यप्रान्तके पिछड़े हुअे तबकोंके भलेसे सम्बन्ध रखनेवाले महकमेके अफसर हैं । मैंने अुन हिस्सोंका दौरा किया जो पहले जसपुर, अुदयपुर, रायगढ़, बस्तर और कांकर रियासतोंके नामसे पहचाने जाते थे । मैंने रायगढ़ और रायपुरके शहर भी देखे । मेरी खुशीका कारण यह था कि ये रियासतें पहले मेरी पहुँचसे बिलकुल बाहर थीं । १९३८ में बस्तर रियासतके जल्दी जल्दीके दौरेको छोड़कर मैं अिनमेंसे किसी भी रियासतमें नहीं जा सका था । हमारे सामान्य सार्वजनिक कार्यकर्ता — मेरा मतलब धारासभाके सदस्यों और समाज-सेवकोंसे है — अिन हिस्सोंमें कभी नहीं गये; क्योंकि वे अुस जगह जानेकी शायद ही चिन्ता करते हैं, जहाँ बाहरवालोंको शककी निगाहसे देखा जाता है और खुफिया पुलिस सादे कपड़ोंमें अुनका पीछा करती है । अब चूँकि ये रियासतें मध्यप्रान्तमें मिल गयी हैं, वहाँ हर कोअी जा सकता है । और वहाँ बसनेवाली जातियोंके संयुक्त चुनाव और बालिग मताधिकारसे चुने हुअे नुमाअिन्दे अगले साल नागपुर और दिल्लीकी धारासभाओंमें जायँगे ।

गाँवकी भट्टियोंमें शराब बनानेका रिवाज

अिन पाँचों रियासतों और अैसी दूसरी रियासतोंमें आम तौर पर शराबकी खपतका आअुटस्टिल सिस्टम यानी गाँव डिस्टिलरियोंका रिवाज जारी है । वहाँ शराब पीनेवालोंको कानूनी शराब केन्द्रीय डिस्टिलरीसे नहीं, बल्कि गाँवोंकी बहुतसी छोटी-छोटी डिस्टिलरियोंसे दी जाती है । अुन्हें आअुट स्टिल या बाहरी भट्टियाँ कहा जाता है, और वे बहुतसे केन्द्रीय गाँवोंमें होती हैं । अिस तरह बस्तरमें ३६३, जसपुरमें ४० और रायगढ़में ७६ अैसी भट्टियाँ हैं । अलग अलग रियासतोंमें करीब ७ से ९ गाँवोंके पीछे औसतन अेक डिस्टिलरी है । अिस तरह सारे गाँवोंमें बड़ी अुदारतासे अैसी भट्टियाँ कायम की गयी हैं, और सब बड़े छोटे गाँवोंको आसानीसे शराब मिल जाती है । अिन रियासतोंके गाँवोंमें पीनेके पानीके लिअे काफी कुअें या बच्चोंकी शिक्षाके लिअे प्राअिमरी स्कूल भले न हों, लेकिन अुन्हें हककी शराब देनेमें किसी तरहकी कंजूसी नहीं की गयी है । रियासतसे मिलनेवाली शराबके अलावा, सारे आदिवासियोंको अुनके सामाजिक अुत्सवोंके मौकोंपर घरोंमें ही 'हंडिया' या 'कुस्ना' शराब गालनेकी आज़ादी दी जाती है, फिर भले वे अिसके लिअे अिजाजत लें या न लें और रियासतको पैसा दें या न दें । यहाँ महुअेके फूल बहुतायतसे मिलते हैं । अुदयपुर रियासतके घरघोड़ा गाँवमें हफ्तेमें अेक बार जो बाज़ार लगता है, अुसमें तो मैंने देखा कि अिस मौसममें महुओंका ही खास व्यापार होता है ।

छोटा नागपुरके राँची और दूसरे जिलोंमें तो पिछले सत्रह-अठारह बरससे बाकायदा अैसी भट्टियोंकी भरमार कर दी गअी थी । अिससे वहाँके आदिवासियोंको भारी माली और नैतिक नुकसान हुआ है । खुश-किस्मतीसे १ मार्च, १९४७ से यह बुराअी खतम कर दी गअी है । बाहरी भट्टियोंका यह अभागा और आदमीका बनाया हुआ शैतानी तरीका अिन रियासतोंसे कब खतम होगा ?

प्रायमरी स्कूल

अिन सारी रियासतोंने अिसको अपना फर्ज़ बना लिया है कि प्रजाको कमसे कम शिक्षा दी जाय । अुनकी यह दलील है कि आदिवासी पढ़ना-लिखना पसन्द नहीं करते, वे अपने बच्चोंको खेती और ढोरोंकी देखभालके कामसे छुड़ाकर स्कूल नहीं भेज सकते । और अगर अुनके लिअे स्कूल खोले भी जायँ, तो भी जब तक जबरदस्ती न की जाय, वे पढ़ने नहीं आयेंगे । और जबरदस्ती करना ठीक नहीं ! नतीजा यह है कि सारे हिन्दुस्तानमें अगर पढ़ेलिखोंकी तादाद १४ फी सदी या अिससे कुछ ज्यादा है, तो कुछ रियासतोंमें अुनका औसत १ से ४ फी सदी तक है । औरतोंकी हालत और भी गयी बीती है । अगर हिन्दुस्तानमें पढ़ीलिखी औरतोंका औसत ५ फी सदी है, तो अुन रियासतों वह ०·५ फी सदी है । मैं जसपुर स्टेटमें दो स्कूलोंका मुआअिना कर सका । अुनमेंसे बड़े स्कूलमें तीन शिक्षक थे और छोटेमें दो । स्कूलोंके मकान झुके हुअे, कमजोर, और अँधेरे थे तथा सुकुमार बच्चोंके लायक बिलकुल नहीं थे । बस्तर स्टेटमें हर ४८ गाँवोंके पीछे अेक लोअर प्रायमरी स्कूल है, और ६,३३,००० की आबादीके लिअे कुछ ५७ लोअर प्रायमरी स्कूल काफी समझे गये हैं । सन् १९१० में अुस समयके राजाके अेक रिश्तेदारने आदिवासियोंको भड़का कर बलवा करा दिया था, जिसमें भड़के हुअे लोगोंने बहुतसे स्कूल जला दिये और शिक्षकोंको सताया और बाहर निकाल दिया । अुसके बाद पोलिटिकल विभागके कहनेसे स्टेटने यह नीति बना ली कि प्रजाके लिअे ज्यादा स्कूल न खोले जायँ, क्योंकि अैसा करनेसे लोगोंके नाराज होनेका अँदेशा है । लेकिन अब समय आ गया है कि मध्यप्रान्तकी सरकार, जिसने बस्तर स्टेटका राजकाज अपने हाथमें ले लिया है, सन् १९४८ में १९१० की "ज्यादा स्कूल नहीं" की नीतिको बदल दे । बस्तर स्टेटकी "ज्यादा स्कूल नहीं" की नीति मध्यप्रान्तमें मिलनेवाली छत्तीसगढ़की चौदहों रियासतोंको लागू होती है ।

सामाजिक शिक्षा

मध्यप्रान्तकी सरकार अब शिक्षाके क्षेत्रमें अेक नियमित आन्दोलन चला रही है, जिसे आम तौरपर प्रौढ़शिक्षा कहा जाता है । लेकिन मध्यप्रान्तकी सरकारने अुसे "सामाजिक शिक्षा" का नाम दिया है । वह १ मअी, १९४८ से शुरू होकर पाँच-छह हफ्ते तक चलेगा । ५०० केन्द्रोंमें यह प्रयोग चल रहा है । सारे मंत्री, शिक्षा-विभागके छोटे-बड़े अफसर और सारे डिप्टी-कमिश्नर दौरा करते हैं और खुद अैसे केन्द्र शुरू करते हैं, ताकि यह आन्दोलन नियमित बनाया जा सके । अिसके लिअे अुन्हें दस-बारह हजार स्वयंसेवकोंकी मदद मिली हुअी है, जिनमें कॉलेजों और सारे नार्मल स्कूलोंसे हालमें निकले हुअे विद्यार्थी-शिक्षक भी शामिल हैं । मैं चाहूँगा कि सामाजिक शिक्षाके अिस समयको बढ़ाकर कमसे कम तीन महीनेका कर दिया जाय । लेकिन बिलकुल न होनेसे तो यह अच्छा ही है । मुझे आशा है कि अगला आन्दोलन अिससे ज्यादा समयका होगा । मैंने बस्तर रियासतके

www.vinoba.in

जगदालपुर केन्द्रमें और जगदालपुरसे काँकर तककी सड़कपर आनेवाले ७ ग्रामस्कूलोंमें चलनेवाले अिस आन्दोलनमें थोड़ा भाग लिया और अुन ७ स्कूलोंमें थोड़ीसी माहवार स्कालरशिप दिलाकर नयी आदिवासी लड़कियोंको भरती कराया।

कोनी तालीमकेन्द्र

मुझे अिस संस्थाको देखकर खुशी हुअी। वह विलासपुरसे तीन मीलपर है और हिन्द सरकारके श्रम-विभाग द्वारा फौजी सेवासे छूटे हुअे लोगोंके लिअे चलायी जाती है। अिस संस्थामें ५० से अूपर टेकनिकल धन्धे सिखानेका काफी अच्छा अिन्तजाम है। अुसमें तालीमसे सम्बन्ध रखनेवाला हर तरहका सामान और काफी होशियार शिक्षक भी हैं। लेकिन वहाँ जितने विद्यार्थियोंको पढ़ानेकी गुंजाअिश है, अुससे बहुत कम (लगभग २५०) अिस समय तालीम ले रहे हैं। आशा की जाती है कि अुसमें प्रान्तके नागरिकोंको तालीम लेनेका मौका दिया जायगा। शायद सिंधी शरणार्थियोंके लिअे भी अुसे खोल दिया जायगा, जो हजारोंकी तादादमें मध्यप्रान्तके शरणार्थी-कैम्पोंमें पड़े हैं। यहाँ मैं कुछ धन्धोंके नाम देता हूँ: (१) खरादका काम, (२) मेकेनिकका काम, (३) सुतारी, (४) लुहारी, (५) कांक्रीटका काम, (६) सर्वे या पैमाअिश, (७) चित्रकारी और सजावट, (८) राजका काम, (९) बिजलीका काम, (१०) मोटर मेकेनिकका काम, (११) बढ़अीगिरी, (१२) साबुन बनानेका काम, (१३) मिट्टीके खिलौने बनानेका काम, (१४) फलोंको मसाला लगाकर डिब्बोंमें सुरक्षित रखनेका काम, (१५) स्याही बनाना, (१६) दर्जीका काम, (१७) दरी बुनना, (१८) गोटा बुनना, (१९) रेशम बुनना, (२०) सूत बुनना (२१) टोकरियाँ बनाने और बेंतकी चीजें बनानेका काम, (२२) जूते बनाना, (२३) जीनसाजी, (२४) छींटकी छपाअी, (२५) रंगाअी, (२६) धातुका काम, वगैरा।

बस्तर रियासत

यह बहुत बड़ी रियासत है। अुसका क्षेत्रफल १३,००० वर्ग मीलसे भी ज्यादा है और आबादी ६,३३,००० है। अिस तरह वहाँकी आबादी बहुत बिखरी हुअी है। आबादीका ७३·५ फी सदी हिस्सा आदिवासियोंका है। रियासतके पहाड़ी हिस्सेमें, जिसे अबुजमार कहते हैं, गोंड जातिके मरिया लोग रहते हैं। जिस चौरस पहाड़ी भूमिपर मरिया लोग रहते हैं, वहाँ जानेका रास्ता न होनेसे आज तक कोअी यात्री वहाँ नहीं पहुँचे हैं। काँकरसे जगदालपुर और जगदालपुरसे गिडम तक यानी ९६+४६ मीलकी सड़कको छोड़कर रियासतकी किसी भी सड़कपर बारिशमें नदी-नालोंका पुल नहीं होता। पुलोंके न होनेसे रियासतके अफसर भी सालमें चार-छह महीने तक अेक जगहसे दूसरी जगह आ-जा नहीं सकते। अिन्द्रावती नदी रियासतके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक पूर्वसे पश्चिमकी ओर १३० मीलसे ज्यादाकी लम्बाअीमें बहती है और गोदावरी नदीके पश्चिमी छोरमें जाकर मिल जाती है। अिस हिस्सेमें मानव-शास्त्रियों और समाज-सेवकोंके अध्ययनके लिअे अच्छी सामग्री है।

जसपुरका आर० सी० मिशन

अिस मिशनके बारेमें जो थोड़ी बातें मुझे मालूम हुअी हैं, अुन्हें यहाँ दिये बिना मैं नहीं रह सकता। जसपुर रियासतमें अुसके पाँच महत्त्वपूर्ण केन्द्र हैं। अुनमेंसे मैंने धोलांग और धोनबाहारके केन्द्रोंका गहरा अध्ययन किया। राँची जिलेके जेसुअिट पादरी तीस साल पहले यहाँ आये थे। अुन्होंने अपने कर्जा-बैंकों, स्कूलों, दवाखानों, प्रचार करनेवाले शिक्षकों और ननोंके जरिये यहाँकी पहाड़ी जातियोंमें धर्म बदलनेका काम किया। छत्तीसगढ़ रियासतके पोलिटिकल अेजण्टने सन् १९४३में अुनके लिअे जो नियम बनाये थे, अुनकी अवहेलना करके वे अिससे भी आगे बढ़े हैं। अुन्होंने वहाँ ६८ लोअर प्रायमरी स्कूल खोल दिये हैं, हालाँकि अुन्हें साफ तौरपर यह कह दिया गया था कि स्टेटकी मरजीके बिना वे कोअी स्कूल न खोलें। जाहिर है कि ये स्कूल अुन लोगोंके लिअे खोले गये हैं, जिनका धर्म बदल डाला गया है, या जिन्हें प्रचारकों या कर्जा-बैंकोंके जरिये अिसाअी बनानेका अिरादा है। मैं यहाँ वह शर्त देता हूँ, जो पोलिटिकल अेजण्टने मिशनके साथ की थी: "मान्य किये हुअे ३७ स्कूलोंके अलावा रियायतकी अिजाजतके बिना मिशन अेक भी नया सहायक स्कूल न खोले और न वह पेड़ोंके नीचे या गिरजाघरोंमें या दूसरे मकानोंमें क्लास चलावे।"

हालाँकि यह आदेश था कि "धार्मिक शिक्षण अुन्हींको दिया जाय, जो लेना चाहें," फिर भी अीसाअी धर्मकी शिक्षा हरअेक विद्यार्थीको दी गयी और नियमोंकी परवाह न करके खुले तौरपर स्कूलके टाअिमटेबलमें अुसे शामिल किया गया।

हालाँकि जुलाअी, १९४३के हुक्ममें यह साफ तौरसे कहा गया है कि "रियासतके लिअे अिन स्कूलोंको पैसेकी मदद देना जरूरी नहीं है," फिर भी धोलांग मिशनके पादरीने रियासतसे पैसेकी मदद माँगी और रियासतके नौकर न होते हुअे भी पादरीके कुछ शिक्षकोंने रियासतसे मँहगाअी भत्तेकी माँग की। अुन्होंने मुझ-जैसे बाहरवालेसे भी अिसकी शिकायत की, मानो मिशन और शिक्षकोंका मध्यप्रान्तकी सरकारसे यह पैसा पानेका हक हो। जब यह शिकायत मुझसे की गयी, तो थोड़े वक्त तक तो मुझे यह विश्वास हो गया कि मध्यप्रान्तकी सरकार, जिसने हालमें ही रियासतका राजकाज अपने हाथमें लिया है, मिशनके साथ अनुचित बरताव कर रही है। लेकिन जब मुझे अुन शर्तोंके बारेमें मालूम हुआ, जो पोलिटिकल अेजण्टने १९४३में मिशनके साथ की थीं, तो मुझे यह सोचनेके लिअे मजबूर होना पड़ा कि मिशन खुद नयी सरकारके साथ अिसीलिअे अनुचित बरताव कर रहा है कि अुसे सच्ची बात मालूम नहीं है।

जसपुर स्टेटमें जिन ओराओंको अीसाअी बनाया गया है, वे चीनके चावलोंके लिअे अीसाअी बने हुअे लोगों जैसे ही हैं। अुन्होंने सिर्फ पेटके लिअे अपना धर्म बदला है। वह भी रियासतके जंगलोंमें रहनेवाले भोलेभाले और सीधेसादे लोगोंको खेतीके लिअे छोटे छोटे कर्जे देकर किया जाता है। वे लोग पहलेसे ही कुचले हुअे हैं और डर व निराशाभरा जीवन बिताते हैं। अैसा धर्म परिवर्तन कोअी सच्ची कीमत नहीं रखता।

भंगियोंके मकान

लेख खतम करनेसे पहले मुझे रायपुरके भंगियोंके बारेमें दो शब्द कहने चाहियें। दस साल पहले यानी सन् १९३८में मैंने रायपुर शहरके भंगियोंकी अिस समस्याकी तरफ ध्यान खींचा था। रायपुर अुस वक्त भी बड़ा शहर था और अब दूसरी लड़ाअीके बाद और भी बढ़ गया है। लेकिन रायपुर म्युनिसिपैलिटीने भंगियोंके लिअे जो मकान बनाये हैं, अुनकी आज भी वही शर्मनाक हालत है, जो दस साल पहले थी। रायपुरकी म्युनिसिपैलिटीमें अितने समयमें कअी परिवर्तन हुअे हैं। मध्यप्रान्तके माननीय प्रधान मन्त्री अिसी शहरके हैं। भंगी मर्दों, औरतों और बच्चोंने अपने मकानों, खासकर लेंडी तालाबके पासकी भंगीबस्तीके मकानोंके बारेमें जो दर्दभरी कहानी सुनायी, अुससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। बरसातके दिनोंमें बस्ती और सड़कके कमरे पानीसे भर जाते हैं। अुनमें अुजेले और हवाके लिअे कोअी गुंजाअिश नहीं है। बारिशमें खूब पानी चूता है। अेक शब्दमें कहें तो वे अिन्सानोंके रहने लायक हैं ही नहीं। नागपुरके अखबारोंमें मुझे अिस भंगीबस्तीके बारेमें बड़े कड़े शब्दोंमें लिखना पड़ा था। मुझे आशा है कि मध्यप्रान्तकी सरकार और लोकल-सेल्फ-गवर्नमेण्टके मन्त्रीका ध्यान अिस तरफ खिंचेगा।

वर्धा, ४-५-'४८

(अंग्रेजीसे) अमृतलाल ठक्कर

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२३ मअी १९४८

शिक्षाका माध्यम

असोशियेटेड प्रेस ऑफ अिण्डियाकी रिपोर्टके मुताबिक युनिवर्सिटी शिक्षाके माध्यमपर विचार करनेवाली कमेटीकी बैठक मअीके पहले हफ्तेमें नअी दिल्लीमें हुअी । डॉ० ताराचन्द अुसके सभापति थे । कमेटीने दूसरे ठहरावोंके साथ नीचेके महत्त्वपूर्ण ठहराव पास किये :

१. शिक्षाका माध्यम बदलनेके लिअे पाँच सालका संक्रान्ति काल रखा जाय । अिस बीच युनिवर्सिटियोंमें शिक्षा और परीक्षाका माध्यम अंग्रेजी रहे । और अिस समयका अुपयोग सम्बन्धित भागमें शिक्षाके माध्यमके रूपमें स्थानीय या अुपराज्य (स्टेट, हिन्दी संघमें मिला कोअी हिस्सा या प्रान्त) की भाषाको दाखिल करनेकी तैयारीमें क्रिया जाय ।

२. सारे विद्यार्थियोंके लिअे हिन्दुस्तानकी संघ-भाषा या राष्ट्रभाषाकी परीक्षा लाजमी होनी चाहिये । लेकिन परीक्षाके नतीजेका विद्यार्थीके भावी जीवनपर कोअी असर नहीं पड़ना चाहिये ।

३. अंग्रेजीकी जगह स्थानीय भाषाओंको दाखिल करनेका काम धीरे धीरे और दरजे बदरजे हो, और अंग्रेजी भाषाको सारी युनिवर्सिटियोंमें लाजमी विषय बनाया जाय ।

४. सारी हिन्दुस्तानी भाषाओंके लिअे अेक समान वैज्ञानिक कोश तैयार करनेके लिअे भाषाशास्त्रियों और वैज्ञानिकोंका अेक बोर्ड कायम किया जाय । जहाँ तक मुमकिन हो अिस कोशमें प्रान्तों और युनिवर्सिटियोंकी सलाहसे अन्तरराष्ट्रीय शब्दोंका अुपयोग किया जाय, और बोर्डको आदेश दिया जाय कि वह अपना काम पाँच सालके भीतर खतम कर दे ।

५. केन्द्रीय सरकारको चाहिये कि वह अलग अलग युनिवर्सिटियोंको अपना अधिकारक्षेत्र बढ़ानेकी अिजाजत देनेके सवालकी जाँच करे, ताकि वे किसी भागके भिन्न भाषाके आधारपर खड़े अल्पसंख्यकोंके भाषासम्बन्धी सवालोंको हल करनेमें मदद पहुँचा सकें ।

६. विधान-सभा आखिरमें जिस लिपिको अपनाये, अुसे सारी युनिवर्सिटियाँ मंजूर करें — कमेटीके कुछ लोग यह मानते हैं कि रोमन लिपिको भी हर हालतमें संघ-भाषा और दूसरी हिन्दुस्तानी भाषाओंकी लिपि माना जाय ।

मैं अिन ठहरावोंकी संक्षेपमें यह टीका करता हूँ ।

अंग्रेजी माध्यमको हटानेमें जो बहुतसी रुकावटें हैं, अुन्हें पार करनेकी कठिनाअियोंका ध्यान रखते हुअे मैं यह सोचता हूँ कि अिस फेरबदलके लिअे पाँच सालका जो समय माँगा गया है, वह अुचित ही है । लेकिन अिस समयको प्रतिज्ञाकी तरह मानना चाहिये और सख्तीसे अुसका पालन करना चाहिये । हम सब जानते हैं कि मुद्दती हुंडीके सिकरानेमें तीन दिनकी मोहलत दी जाती है । लेकिन यह चीज साफ तौरसे समझ ली जाती है कि तीनका मतलब तीन ही है; चौथा दिन हुआ कि साख गयी ।

यह मुझे अुस दिनकी याद दिलाता है, जब मैंने १९१७ में पहले पहल गांधीजीको बम्बअीमें देखा और आमसभामें अुनका भाषण सुना था । सभाने हिन्द सरकारसे अुन दिनोंकी चालू गिरमिटिया मजदूरीकी प्रथाको अेक खास तारीखको खतम कर देनेकी माँग की थी । गांधीजीने सरकार और श्रोताओंको यह चेतावनी दी थी कि तारीखके बारेमें मेरी बात प्रतिज्ञारूप समझी जाय । यह कोरी धमकी ही नहीं है । अगर तारीख चली गयी और सरकारने यह रिवाज बन्द नहीं किया, तो मैं अिस शिकायतके मिटने तक चैनसे नहीं बैठूँगा । और यह ध्यान देनेकी बात है कि वह शिकायत ठीक तारीखके पहले मिटा दी गयी थी ।

हम अेक दूसरा मौका भी याद करें । तब भी अेक खास तारीखको कोअी काम करनेका निश्चय किया गया था और दृढ़तासे अुसका पालन भी हुआ था । सन् १९२८ के कांग्रेस जलसेमें हिन्दुस्तानको औपनिवेशिक दरजा देनेके लिअे ब्रिटिश सरकारको अेक सालकी मोहलत दी गअी थी । अगर सरकार अिस समयके भीतर यह माँग पूरी न करे, तो कांग्रेसका ध्येय 'आज़ादी'से बदलकर 'मुकम्मल आज़ादी' रखना तय हुआ था । वह समय ३१ दिसम्बर १९२९की रातको १२ बजे खतम हुआ और सन् १९३० के जन्मकी घोषणाके साथ ही कांग्रेसका ध्येय बदलनेकी घोषणा भी की गयी । कांग्रेसका ध्येय मुकम्मल आज़ादी घोषित हुआ । अुसके बाद मुकम्मल आज़ादीके ध्येयको हासिल करनेके लिअे जो आन्दोलन हुअे, अुन्हें सब अच्छी तरह जानते हैं ।

अुसी तरह मुझे आशा है कि हिन्द सरकार और हिन्दुस्तानकी युनिवर्सिटियाँ पाँच सालके समयको देशकी जनताको दिया हुआ पवित्र वचन मानेंगी, और जब सन् १९५३ की गर्मीकी छुट्टियोंके बाद स्कूल और कॉलेज फिरसे खुलेंगे, तो हरअेक शिक्षण संस्था अूँचीसे अूँची शिक्षा अपनी स्थानीय या अुपराज्यकी भाषामें ही देगी । (मैं यह मान लेता हूँ कि यहाँ स्थानीय या अुपराज्यकी भाषाका वही मतलब है, जो अुसे हिन्दुस्तानके नये विधानके मसविदेमें दिया गया है । यानी अगर कोअी अुपराज्य या हिन्दी संघमें मिला हुआ हिस्सा अेक भाषावाला प्रदेश हो, तो शिक्षाका माध्यम अुस अुपराज्यकी भाषा होगी; और अगर वह बहुभाषी हो, तो शिक्षाका माध्यम अुसके अुस हिस्सेकी भाषा होगी, जिसमें कोअी युनिवर्सिटी बनी हुअी है ।)

अगर अिस वचनका पालन करना हो, तो अूपरके तीसरे ठहरावका यह मतलब होता है कि दरअसल हिन्दुस्तानी भाषाओंके जरिये शिक्षा देनेका काम कॉलेजकी प्रथम वर्षकी क्लासोंमें कमसे कम जून, १९४९ तक शुरू कर ही देना होगा । और, हर साल अेक अूपरकी क्लास अुसके साथ जोड़नी होगी । अगर यह सोचना ठीक हो, तो मेरा यह सुझाव है कि परीक्षा देनेवाले विद्यार्थियोंको, अंग्रेजीके जरिये पढ़ने या शिक्षा ग्रहण करनेपर भी, आजसे ही अपने सवालोंका जवाब स्थानीय भाषा या अुपराज्यकी भाषामें देनेकी अिजाजत दी जाय, तो माध्यम बदलनेके काममें मदद मिलेगी और विद्यार्थियोंके लिअे वह वरदान साबित होगा । पहले कुछ बरस तक यह भाषा अंग्रेजी-हिन्दुस्तानीका मिलाजुला रूप हो सकती है, लेकिन वह विद्यार्थियोंमें किसी विषयको अपनी ही हिन्दुस्तानी भाषामें सोचनेकी जरूरी आदत डालनेमें मदद करेगी । आदत बननेमें बहुत देर लगती है, और अुसे बनानेकी कोशिश करनी होती है । अिस दृष्टिसे मुझे लगता है कि अंग्रेजीको पाँच बरस तक परीक्षाके माध्यमके तौरपर चालू रखनेके निश्चयमें भी सुधार करनेकी जरूरत है ।

दूसरे ठहरावमें शिक्षामें संघ-भाषाके स्थानका जिक्र है । अगर अुस भाषाको पूर्ण विकसित और अंग्रेजीके मुकाबले खड़ी होने लायक अन्तर प्रान्तीय भाषा बनाना हो, तो अुसे स्कूलों और कॉलेजोंमें वही प्रमुख स्थान देना होगा, जो आज तक अंग्रेजीको दिया गया है । अंग्रेजीके बनिस्बत कम खर्च और कम मेहनतसे अुसे यह स्थान दिया जा सकता है; क्योंकि हिन्दुस्तानकी विभिन्न भाषाओंसे अुसका पासका सम्बन्ध है । आज जिस ढंगसे परीक्षा ली जाती है, अुसे मैं बहुत ठीक नहीं मानता । लेकिन चूँकि सारी नियमित शिक्षामें अुसे महत्त्वका स्थान मिला हुआ है, अिसलिअे अगर विद्यार्थियोंमें अिस विचारने घर कर लिया कि बिना किसी नुकसानके हिन्दुस्तानकी संघ-भाषाकी अुपेक्षा की जा सकती है, तो वह हमेशा अविकसित और असन्तोषजनक बनी रहेगी । यह बात आम तौरसे जाहिर है कि जब बम्बअी युनिवर्सिटीने स्थानीय भाषा, भूगोल और सायन्सको परीक्षाके बजाय प्रमाण-पत्र पानेके विषय बना दिये, तो पता चला कि

www.vinoba.in

विद्यार्थी अुनकी अुपेक्षा करते हैं। अगर दूसरे ठहरावमें "हिन्दुस्तानकी संघभाषा या राष्ट्रभाषा" की जगह "अंग्रेजी भाषा" रखा जाता और तीसरे ठहरावमें "अंग्रेजी भाषा" की जगह "हिन्दुस्तानकी संघभाषा या राष्ट्रभाषा" रखा जाता, तो सचमुच ज्यादा अच्छा होता।

चौथे और पाँचवें ठहराव अूपरके तीन ठहरावोंके लाजमी नतीजे मालूम होते हैं। 'हरिजन'के पिछले अंकमें मैंने अपने 'राष्ट्रभाषा' नामके लेखमें संघभाषा और लिपियोंकी चर्चा की है।

फिर भी जो काम किया गया है, अुसके लिअे मौलाना आज़ाद और डॉ० ताराचन्दकी कमेटी धन्यवादके पात्र हैं। मुझे आशा है कि युनिवर्सिटियोंके विभिन्न विभाग और प्रोफेसर अिन ठहरावोंको पूरी तरह सफल बनानेके लिअे जीतोड़ मेहनत करेंगे। चूँकि ये ठहराव सारी युनिवर्सिटियों और सरकारोंकी मिलीजुली कोशिशोंके नतीजे हैं, अिसलिअे मेरा विश्वास है कि यह नीति सब युनिवर्सिटियों द्वारा स्वीकृत और सबपर बन्धनरूप मानी जायगी। और मुझे आशा है कि अिससे बचनेकी कोअी कोशिश नहीं करेगा।

बम्बअी, १४-५-'४८

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल मशरूवाला

तामीरी संस्थाओंका सम्मेलन

मार्च, १९४८ के मध्यमें सेवाग्राममें रचनात्मक कार्यकर्ताओंका जो सम्मेलन हुआ था, अुसमें पास किये गये अेक ठहरावमें यह सिफारिश की गयी थी कि आपसी मेलजोल बढ़ाने और कामको अच्छे ढंगसे चलानेकी दृष्टिसे आजकी सारी रचनात्मक संस्थाअें अपना अेक संघ कायम करनेके बारेमें प्रस्ताव भेजें। अुसके मुताबिक श्री जे० सी० कुमारप्पाने, जिन्हें अिस बारेमें जरूरी कदम अुठानेका जिम्मा दिया गया था, पिछली २७ अप्रैलको बम्बअीमें रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधियोंका अेक सम्मेलन बुलाया। नीचेकी ग्यारह संस्थाओंके प्रतिनिधि सम्मेलनमें आये थे: अखिल भारत चरखा-संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, गोसेवा संघ, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, हरिजनसेवक संघ, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्ट, नवजीवन ट्रस्ट, कुदरती अुपचार ट्रस्ट, पश्चिम भारत आदिवासी कार्यकर्ता संघ, हिन्दुस्तानी मजदूर संघ। कुछ विशेष तौरसे बुलाये हुअे सज्जन भी आये थे। श्री काकासाहब कालेलकर सम्मेलनके सभापति थे। अिस बारेमें जो अलग अलग सुझाव रखे गये, अुनपर विचार करने और विस्तारसे चर्चा करनेके बाद सम्मेलनने नीचेके ठहराव पास किये:

१. आज यहाँ जिन ग्यारह संस्थाओंके प्रतिनिधि आये हैं, वे सब "अखिल भारत सर्व सेवा संघ" नामके अेक सामान्य संघमें मिल जायँ। अिस संघमें शामिल होनेवाली हरअेक संस्था अपना अेक अेक प्रतिनिधि भेजे। ये ग्यारह प्रतिनिधि अपनी पहली बैठकमें दूसरे चार मेम्बर और जोड़ लें, जो गांधीजीके आदर्शोंमें पूरी श्रद्धा रखते हों। ये पन्द्रह मेम्बर मिलकर कार्यकारिणीका काम करें और नीचेके मकसदोंके लिअे अपनी सत्ताका अुपयोग करें:

(क) अखिल भारत सर्व सेवा संघमें मिलनेवाली अलग अलग संस्थाओंकी सामान्य नीतिकी रहनुमाअी करना,

(ख) अुनके कामोंको अेक सूत्रमें बाँधना, और

(ग) अुनका निरीक्षण करना।

दूसरी बातें, जो सारे संघोंके लिअे समान हैं जैसे प्रचार और कार्यकर्ताओंकी तालीम, अूपरकी तीन बातोंके साथ जोड़ी जा सकती हैं, बशर्ते मिलनेवाले संघ अैसा चाहें।

२. यह सर्व सेवा संघ, अपनी अंगरूप संस्थाओं या रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न अंगों द्वारा स्थानीय जनताकी सेवा करनेवाली दूसरी संस्थाओंकी मददसे, स्थानीय केन्द्र शुरू कर सकता और चला सकता है।

(नोट: अिस तरह यह सर्व सेवा संघ सिर्फ सलाह देनेवाली या विचार करनेवाली संस्था ही नहीं, बल्कि सक्रिय कार्यकारिणी है, जो अपनी मातहत संस्थाओंकी स्वतंत्र सत्ता पर आक्रमण किये बिना आम लोगोंकी सीधी सेवा करती है।)

३. यह सम्मेलन सिफारिश करता है कि अूपरके ठहरावके मुताबिक ग्यारह रचनात्मक संस्थाअें अपना अेक अेक प्रतिनिधि चुनें, और श्री कुमारप्पासे बिनती करता है कि वे अिन संस्थाओंसे अिस बारेमें सुझाव माँगें कि सर्व सेवा संघकी सदस्यता और अुसकी अंगरूप संस्थाओंकी सदस्यताके लिअे कमसे कम क्या प्रतिज्ञा रखी जाय। चरखा संघके सुझावके साथ ये सब सुझाव और श्री कुमारप्पा द्वारा तैयार किया हुआ प्रतिज्ञाका मसविदा संघबद्ध होनेवाली सारी संस्थाओंके बीच घुमाया जाय।

सर्व सेवा संघ अपना संयोजक चुनेगा, और हर बैठकका सभापति अलग चुना जायगा। अिस संघको अपने विधानके नियम बनानेकी सत्ता दी गयी है।

मेरी यह सलाह है कि संघबद्ध होनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधि चुननेमें शीघ्रता की जाय और जुलाअी, १९४८ के आखिर तक सर्व सेवा संघका बाकायदा अुद्घाटन कर दिया जाय।

७-५-'४८

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

विनोबाकी यात्रा

पूर्व पंजाब और दिल्लीका चित्र

श्री विनोबा अपने वर्धाके साथियोंके साथ ३० मार्च १९४८को दिल्ली पहुँचे। तबसे १२ अप्रैल तक अुन्होंने पूर्व पंजाब और दिल्लीके शरणार्थी कैम्पों और दूसरे संकटग्रस्त भागोंका दौरा किया। अुन्होंने अनेक संस्थाअें देखीं, और नेताओं तथा कार्यकर्ताओंके साथ अुनका सलाह-मशविरा भी हुआ। अुन्होंने अलग अलग जगहोंपर जो भाषण दिये, अुनकी रिपोर्ट 'हरिजन' पत्रोंमें समय समयपर छपती रही है। यहाँ मैं अुनकी दूसरी प्रवृत्तियोंकी और वहाँकी परिस्थिति और कामकी छोटीसी झाँकी देता हूँ।

३१-३-'४८

दिल्लीमें शरणार्थियोंकी कअी छावनियाँ हैं। अुनमेंसे विनोबाजी और अुनके साथियोंने कालिका, सावित्रीनगर, पुराना किला, बेलारोड और तीस हजारीकी छावनियोंका मुआअिना किया। अिनमेंसे पहली दो छावनियोंके लोगोंको सरकारकी तरफसे मुफ्त रेशन दिया जाता है। कालिका छावनीमें करीब पचास चरखे चलते हैं। लेकिन यह तादाद बहुत थोड़ी है। दूसरी कठिनाअी है पूरी मात्रामें अच्छी कपास या रूअी न मिलनेकी। अुसमें २००० शरणार्थी रहते हैं। सावित्री-नगरमें सहकारी ढंगपर तेलघानी, बगीचे और बेकरी वगैराका काम चलता है। वहाँ ५०० आदमी रहते हैं। बाकीकी तीन छावनियोंके लोग दिल्लीमें कोअी न कोअी काम करके अपनी रोजी कमाते हैं। छावनियोंमें अुन लोगोंके रहनेकी व्यवस्था सरकारकी तरफसे की जाती है। अिन तीनमेंसे तीस हजारी छावनी अुन लोगोंकी है, जिन्हें दिल्लीकी मसजिदोंसे हटाकर यहाँ बसाया गया है। अुनमें बहुत बड़ा हिस्सा दुकानदारोंका है। अुन्होंने दिल्लीमें जगह जगह अपनी दुकानें खोल ली हैं। विनोबाजी सरदारश्रीसे मिल आये। सरदारने यह अिच्छा जाहिर कि वे दूसरी बार आकर अुन्हें गीता वगैरा सुनावें।

१-४-'४८

आज विनोबाजीने अपनी पार्टीके साथ हरिजनबस्तीके पासकी किंग्सवे छावनीका मुआअिना किया। यह दिल्लीकी सबसे बड़ी छावनी है, जिसमें तीस हजार शरणार्थी रहते हैं। वहाँ लोगोंने शिकायत की कि अुन्हें पूरा पानी नहीं मिलता, साँप निकलते हैं, दियेबत्तीका पूरा अिन्तजाम नहीं है, आटा खराब मिलता है, बच्चोंके लिअे दूध नहीं मिलता, जो मिलता है वह भी अच्छा नहीं होता — बिगड़ जाता है, तम्बुओंमें धूप बहुत लगती है, वगैरा वगैरा। वे लोग बड़े असन्तुष्ट हैं। अुनकी खास माँग यह है कि हमारे लिअे

www.vinoba.in

मकानोंका जल्दी बन्दोबस्त किया जाय। शिकायतें सुनते सुनते ही काफी देर हो गयी, फिर भी कुछ लोगोंको असन्तोष रहा कि अुनकी बात नहीं सुनी गयी। विनोबाजीने सबको धीरज बँधाते हुअे कहा—"मैं आपको भगवान समझकर आपकी सेवा करने आया हूँ। आपका दुःख मैं समझ गया हूँ। बहुतसी बातें हृदयसे सुननेकी होती हैं। अुन्हें कानोंसे सुननेकी जरूरत नहीं होती। आप सब धीरज रखिये।"

कलके ठहरे मुताबिक आज फिर विनोबा सरदारसे मिलने गये और अुन्हें शंकराचार्यके साधनपंचक स्तोत्रका और गीताके ग्यारहवें अध्यायका थोड़ा हिस्सा सुनाया और अर्थ समझाया। अिसके बाद डॉ० सुशीला नय्यरके साथ पटियाला, बहावलपुर वगैराकी भगाअी हुअी औरतोंके सवालोंपर चर्चा हुअी। यह कहा गया कि कुछ औरतें वापस नहीं आना चाहतीं। कुछ कहती हैं—'अब हमारी शादी हो चुकी है। अिसलिअे जहाँ हैं, वहीं अच्छी हैं।' दूसरी कुछका कहना है—'हमारा धर्म गया, अिज्जत गयी, अब देश भी क्यों छुड़ाते हो?' अिस तरहकी अुलझनें अिस काममें पैदा हुअी हैं।

२-४-'४८

आज श्रीमती रामेश्वरी नेहरू विनोबाजी और अुनकी पार्टीको बुनियादी तालीमका वह स्कूल देखनेके लिअे ले गयीं, जो रिलीफ मिनिस्ट्रीकी तरफसे किंग्सवेमें चलाया जाता है। वहाँ शरणार्थियोंके तीन से दस बरसकी अुमरके डेढ़सौ बालकोंको पढ़ाया जाता है।

सब्जी मंडीमें अेक स्त्रियोंका केन्द्र चल रहा है, वहाँ कुछ अनाथ बच्चे भी हैं। दवाखाना और बीमारोंकी सारसंभाल ये दो अुस केन्द्रकी खास बातें हैं। वहाँ ज्यादातर अनाथ बनी हुअी या भगाअी हुअी औरतें रहती हैं। अुस केन्द्रमें कसीदा काढ़ने और सीनेपिरोनेका थोड़ा काम चलता है। करोलबागमें भी अैसे ही अुद्योगोंका अेक केन्द्र चलता है। अुसमें चार पाँच सौ औरतें तालीम लेती हैं। दो दो घण्टे तालीम लेकर वे अपनी अपनी जगह चली जाती हैं।

सब्जी मंडी, करोलबाग और पहाड़गंज तीनों मुसलमान मोहल्ले थे। लेकिन अब पंजाबसे आनेवाले शरणार्थी वहाँ बस गये हैं। दिल्लीमें करीब पांच लाख शरणार्थी आये थे। अुनमेंसे लगभग साढ़े चार लाख अिन बस्तियोंमें बस गये हैं। करीब पचास हजार तम्बुओंमें पड़े हैं। अिसके अलावा, अपने दोस्तोंके यहाँ रहनेवाले लोग भी हैं। जो लोग घरोंमें रहने लगे हैं, अुन्हींकी औरतें खासकर औद्योगिक शिक्षा लेने आती हैं। अिन स्त्रियोंकी बनायी हुअी कलाकी चीजें बेचनेके लिअे अेक दुकान भी कनाट सर्कसमें खोल दी गयी है।

तीसरे पहर विनोबाजीने दिल्ली कांग्रेस सेंट्रल रिलीफ कमेटीकी बैठकमें दो बातोंकी तरफ कार्यकर्ताओंका ध्यान खींचा: (१) कालिका कैम्प जैसी शरणार्थी छावनीमें कताअीसे लेकर बुनाअी तकके धन्धे कराये जा सकते हैं। आटा पीसना, सफाअी वगैरा काम भी कराया जा सकता है। कार्यकर्ता खुद अिन कामोंमें भाग लेकर अुन्हें शुरू करावें; (२) तेलघानी, चक्की वगैरा चलाकर पैदा किया हुआ माल पहले छावनीमें ही अिस्तेमाल किया जाय और बचा हुआ माल ही बाजारमें बेचनेके लिअे रखा जाय। सबसे पहले अैसे धन्धे शुरू किये जायँ, जिनसे छावनीकी रोजाना जिन्दगीकी चीजें वहीं पैदा हो सकें। पैसेके हिसाबसे यह मँहगा पड़े, तो कोअी चिन्ता नहीं। लेकिन छावनियाँ रोजानाके जीवनकी बुनियादी चीजोंमें स्वावलम्बी बनें, यह ज्यादा महत्त्वकी बात है।

शामको विनोबाजी दिल्लीकी शान्ति कमेटीकी बैठकमें गये। वहाँ अिस बातकी ओर अुनका ध्यान खींचा गया कि पूज्य बापूजीके अवसानके बाद वातावरण फिरसे बिगड़ने लगा है। कुछ अखबार अैसा प्रचार करते हैं, जिससे वातावरण बिगड़े। हिन्दुओंको अभी बसाया नहीं जा सका है, अुसके पहले ही मुसलमान पाकिस्तानसे वापस आने लगे हैं। लेकिन समय पूरा हो जानेके कारण चर्चा ४ अप्रैलके लिअे मुलतवी कर दी गयी।

३-४-'४८

दिल्लीसे ५० मीलपर पानीपत, कर्नाल वगैराकी छावनियाँ देखीं। छावनियोंके मुआअिनेके लिअे अेक साथ घूमनेके बदले पार्टीके लोग छोटे छोटे दल बनाकर अलग अलग हिस्सोंमें घूमे। अिन छावनियोंमें रहनेकी बड़ी दिक्कत है। सिर्फ तीन फुट अूँचे तम्बुओंमें लोग पड़े हैं। ये तम्बू दिनको खूब तपते हैं। रातको अुनके अन्दर सोया नहीं जा सकता। बड़े तम्बुओंके खतम हो जानेसे फौजी विभागके अेकअेक आदमीके रहने लायक तम्बू काममें लिये गये हैं। बड़े तम्बुओंमें रहनेवाले लोग जैसेजैसे दूसरी जगह बसाये जाते हैं, वैसे वैसे छोटे तम्बुओंके लोग बड़े तम्बुओंमें भेजे जाते हैं।

विनोबाजी सबसे करीब करीब ये ही सवाल करते: (१) आपकी खास मुसीबतें क्या हैं? (२) क्या हाथसे आटा पीसनेकी तैयारी है? (३) कातने, बुनने वगैराका काम करोगे? (४) जमीन मिले तो खुद खेती करनेके लिअे तैयार हो? (५) जमीन और सामान मिले, तो अपने मकान खुद खड़े कर लोगे? पहले सवालके जवाबमें सबकी कहानी लगभग अेकसी ही थी। दूसरे चार सवालोंका जवाब "हाँ" में मिलता था। लेकिन साथ ही लोग कहते थे—"जो काम मिलेगा, वह करेंगे। लेकिन हम हैं तो दुकानदारी, व्यापार, जमींदारी, साहुकारी वगैरा करनेवाले लोग। किसी शहरके पास अैसे काम मिल जायँ, तो ज्यादा अच्छा हो।"

अेक बातमें विनोबाजी दिनदिन ज्यादा विश्वास कर लगे हैं। वह यह कि शरणार्थियोंको मुफ्त रेशन देनेका रिवाज अेकदम नहीं, तो धीरे धीरे बन्द करना ही चाहिये।

४-४-'४८

आज विनोबाजीने दिल्लीके पुनर्निवास कमिश्नर और पुनर्निवास बोर्डके प्रेसिडेण्टसे मुलाकात की और अप्रैलकी मुलतवी की हुअी शान्ति कमेटीकी बैठकमें भी भाग लिया।

५-४-'४८

आज सुबह पूर्व पंजाबमें रोहतककी छावनी देखी। पहलेसे परवाना लिये बिना अिस छावनीके भीतर कोअी नहीं जा सकता है। अिससे तीन-साढ़ेतीन सौ आदमी छावनीके बाहर पड़े दिखाअी दिये। अुनके लिअे न तम्बुओंका अिन्तजाम था और न रेशनका। परवानेकी पाबन्दी छावनीकी गुंजाअिशसे ज्यादा तादादमें अिकट्ठे होनेवाले लोगोंको रोकनेके लिअे लगाअी गयी है। यहाँके आसपासके गाँवोंमें जमीन देकर शरणार्थियोंको बसानेका काम जारी है। पाँच-छह हजार आदमियोंको अिस तरह बसाया भी गया है। लेकिन अुनमेंसे कुछ वापस छावनीमें आते रहे हैं। अुनकी शिकायत यह है कि अुन्हें जो जमीन दी गअी है, वह पश्चिम पंजाबकी अुनकी जमीनसे घटिया किस्मकी है। सबसे बड़ा लालच तो अुन्हें होता है मुफ्त रेशनका। सरकार अिसका अुपाय खोजनेकी कोशिश कर रही है।

अम्बालाके पास बूड़िया जागीरके मुसलमानोंने पूज्य बापूजीकी सलाहसे पाकिस्तान जानेका विचार छोड़ दिया था। मुसलमानोंने विनोबाजीसे कहा कि जागीरके सिक्ख जमींदार हमें अच्छी मदद कर रहे हैं। लेकिन कुछ अधिकारी अैसी नीति अमलमें लाते हैं जिससे पाकिस्तान जानेके लिअे मजबूर हो जाना पड़े। अगर फौजी रक्षण हटा लिया गया, तो मुसलमानोंकी जान खतरेमें है।

६-४-'४८

आज विनोबाजी और अुनकी पार्टीने गुड़गाँव छावनी देखी। यहाँ अेकदो जगह चक्की चलानेकी नयी बात देखनेमें आयी। डिप्टी कमिश्नरने लाचारी बताते हुअे कहा कि गुड़गाँव जिलेमें आटेकी मिलें काफी न होनेसे अिस तरह हाथसे पिसवाना पड़ता है। अिसपर विनोबाजीने कहा—'मैं तो यही चाहता हूँ। मैं तो कहता हूँ कि अिस छावनीमें और ज्यादा चक्कियाँ दाखिल कीजिये।' यहाँकी सभामें भी अेक नअी बात दिखाअी दी। औरतोंकी तरफसे लिखी प्रार्थना की गयी कि हमें सौ चक्कियाँ और सौ चरखे दिलवाअिये।

www.vinoba.in

गुड़गाँवसे बीस मीलपर घासेड़ा गाँवमें मेव लोगोंकी अेक सभा रखी गयी थी। मेव मेहनती, गरीब, अनपढ़ लेकिन मजबूत लोग हैं। अिस जिलेमें अुनकी आबादी लगभग चार लाखकी थी। अुसमें से अब करीब डेढ़ लाख ही बचे हैं। बाकीके पाकिस्तान भाग गये या आसपासके हिस्सोंमें फैल गये हैं। पश्चिम पंजाबसे आनेवाले हिन्दू शरणार्थियोंने अुनकी जमीनों पर कब्जा कर लिया है। अब मेव लौटने लगे हैं, और अपनी अपनी जमीनें वापस लेना चाहते हैं। अिस तरह यह अेक मुश्किल सवाल खड़ा हो गया है। अिसके बाद सब बख्तावरपुर गये। वहाँ कस्तूरबा ट्रस्टकी तरफसे अेक जच्चाखाना और दवाखाना चलता है।

७–४–'४८

आज विनोबाजी और अुनके साथियोंने श्री ठक्कर बापाके साथ दिल्लीकी हरिजन बस्ती देखी। वहाँ विद्यार्थियोंके साथ अुनकी दिलचस्प और विनोदभरी बातें हुअीं। तीसरे पहर जमीयत-अुल-अुलेमाके नुमाअिन्दे विनोबाजीसे मिलने आये।

८–४–'४८

आज श्री विनोबा और अुनकी पार्टीने पं० नेहरूके साथ कुरुक्षेत्र छावनीका मुआअिना किया। यहाँ लगभग १,८६,००० शरणार्थी हैं। अुनके चार हिस्से करके चार नगर बसा दिये गये हैं। सरकारको रोज करीब दो लाखका खर्च करना पड़ता है। यहाँके शरणार्थियोंकी अेक ही शिकायत है कि रेशन कम मिलता है। यहाँ स्कूल, दवाखाना, अुद्योगविभाग वगैरा शुरू किये गये हैं। दूसरी सब छावनियोंके बनिस्बत यहाँ पानी, सफाअी, खुराक, दूध वगैराका अिन्तजाम बहुत अच्छा है। विनोबाजी दिल्लीसे कुरुक्षेत्र तक पंडितजीकी मोटरमें आये और रास्तेमें अुन्होंने मुफ्त रेशन देनेके रिवाजका जल्दीसे जल्दी खातमा करनेपर जोर दिया। पंडितजीने आमसभामें दिये गये अपने भाषणमें अिस बातका बढ़ाकर जिक्र किया और बताया कि जो लोग काम करनेके लिअे राजी होंगे, अुन्हें सबसे पहले बसाया जायगा।

शामको पंडितजी दिल्ली लौट गये। विनोबाजीको अम्बाला जाना था। रास्तेमें सबने गीता मन्दिरका दर्शन किया। कुरुक्षेत्रमें जिस जगह श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुनको गीताका अुपदेश देनेकी बात कही जाती है, वहाँ यह मन्दिर बना हुआ है। यहाँ विनोबाजीने गीताध्यान और गीताके कुछ हिस्सेका पारायण किया। बादमें ज्ञानेश्वरीका पाठ करते करते अुनका कण्ठ भर आया और वे बोल न सके। अुनकी आँखोंसे आँसुओंकी धार बहने लगी। पन्द्रह-बीस मिनट मन्दिरमें ठहरकर अम्बालाकी तरफ रवाना हुअे।

रातको अम्बाला पहुँचे। पूर्व पंजाबके प्रधानमंत्री डॉ० गोपीचन्द भार्गव वहाँ आये थे। अुन्होंने विनोबाजीके साथ शरणार्थियोंको फिरसे बसानेकी योजनापर चर्चा की और यह आशा जाहिर की कि अम्बालाके नजदीक ही जब पूर्व पंजाबकी नयी राजधानी बनेगी, तो अुसमें बहुतसे लोगोंको काम मिल जायेगा। नीची छावनियोंके बदले अूँची छावनियाँ बनानेका काम भी शुरू हुआ है। अुसमें कुछ लोगोंको काम मिलता है। विनोबाजीने शरणार्थियोंमें ग्रामोद्योगके काम बढ़ानेपर जोर दिया।

९–४–'४८

आज अम्बालाके पासकी तीन-चार छावनियाँ देखीं। वहाँके नमूनेके तौरपर खड़े किये हुअे कच्चे मकान भी देखे। सामुदायिक प्रार्थना और कवायद अिन छावनियोंकी अेक विशेषता थी।

१०–४–'४८

छावनियोंके मुआअिनेका काम पूरा हुआ। अब आगे क्या किया जाय, अिसपर चर्चा करनेके लिअे सब अिकट्ठे हुअे। श्री शंकरराव देव, धोत्रेजी, जाजूजी, कृष्णदास गांधी, जेठालाल गोविन्दजी और दूसरे लोगोंने चर्चामें भाग लिया। चर्चाके खास विषय नीचे दिये जाते हैं:

१. हालाँकि विनोबा और अुनकी पार्टीने सिर्फ दिल्ली और पूर्व पंजाबकी ही छावनियाँ देखी हैं, फिर भी यह सवाल सिर्फ अिन्हीं हिस्सों तक महदूद नहीं है। सिन्ध व पूर्व बंगालके सवाल और हिन्दुस्तानके दूसरे प्रान्तोंमें पहुँचे हुअे शरणार्थियोंके सवाल पर भी ध्यान देना होगा। अिस दृष्टिसे सारे हिन्दुस्तानके लिअे अेक अैसी केन्द्रीय संस्था होनी चाहिये, जो अिन सारी जगहोंके शरणार्थियोंको मदद दे सके और अुनकी रहनुमाअी कर सके। अिसके लिअे कांग्रेसकी केन्द्रीय राहत समितिकी फिरसे रचनाकी जाय और अेक जवाबदार, योग्य, और कर्तव्यनिष्ठ आदमीको अुसका मुखिया बनाया जाय।

२. अूपरकी समिति शरणार्थियोंके सवालोंको हल करनेका काम करेगी। फिर भी देशमेंसे साम्प्रदायिक नफरतको मिटाने, हिन्दुस्तानमें रहनेवाले मुसलमानोंको सलामत रखने और पाकिस्तानसे लौटनेवाले मुसलमानोंको फिरसे हिन्दुस्तानमें बसानेके कामपर भी विशेष ध्यान देना होगा। ये खास तरहके और भारी जवाबदारीके सवाल हैं।

३. हालाँकि शरणार्थियोंको फिरसे बसानेका काम सिर्फ सरकार ही अच्छी तरह कर सकती है, फिर भी अेकाध छावनीकी जिम्मेदारी लेकर वहाँ गैरसरकारी ढंगसे ठोस काम कर दिखानेकी ज़रूरत है। किसी अेक केन्द्रको चुनकर वहाँ कातना, पीसना और दूसरे ग्रामोद्योग शुरू कराये जायँ। छावनीमें सफाअीका काम किया जाय और अिन सबका फायदा समझाकर शरणार्थियोंमें स्वावलम्बनकी भावना पैदा की जाय। गुड़गाँव जिलेमें मेव लोगोंकी बस्ती है। अिसलिअे वहाँका अेक मेव केन्द्र अिसके लिअे ज्यादा अच्छा साबित होगा, क्योंकि वहाँ अूपरके दोनों सवालोंका अेक साथ सामना करना होगा।

अिस दृष्टिसे वहाँ किस तरह काम किया जाय, अिसपर विचार हुआ।

४. विधवाओं और लड़कियोंकी शिक्षा वगैराका सवाल स्वतंत्र रूपसे हाथमें लेनेकी ज़रूरत मालूम हुअी। वह काम भी अिसके साथ ही शुरू किया जाय। अुसके लिअे हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और कस्तूरबा ट्रस्टकी मदद ली जाय।

तीसरे पहर दिल्लीकी जमीयत-अुल-अुलेमाके प्रतिनिधि फिर विनोबाजीसे मिले और अुन्हें ३१ मार्च और १ अप्रैलको धोलपुर राजमें होनेवाले दंगेकी खबर दी। शामको विनोबाजी बिड़ला भवन गये। वहाँ पू० बापूजीके रहनेका कमरा और अुन्हें गोली लगनेकी जगह देखी। गोली लगनेकी जगह अेक शिला रखकर अुस पर 'हे राम' शब्द खोद दिये गये हैं। यह जगह अभी आम लोगोंके लिअे नहीं खुली है। अिसके बाद भंगी-बस्ती देखी।

११–४–'४८

आज विनोबाजी और अुनके साथी बीबी नूरका अुर्स और महरोलीकी ख्वाजा कुतुबुद्दीनकी दरगाह देखने गये। यह बात सबको याद होगी कि गांधीजीने दिल्लीमें अपना अुपवास छोड़नेकी सात शर्तोंमेंसे अेक शर्त यह भी रखी थी कि अिस दरगाहका सालाना अुर्स सलामतीसे भरना चाहिये। दंगेमें अिस दरगाहको काफी नुकसान हुआ था। अुसकी मरम्मतका काम अभी चालू है।

१२–४–'४८

विनोबाजी और अुनकी पार्टीने डॉ० जाकिरहुसेनकी जामिया-मिलिया संस्था देखी और पासके गाँवमें संस्थाकी तरफसे शरणार्थियोंके लिअे चलाया जानेवाला अेक बुनियादी स्कूल भी देखा। पिछले दंगेमें जामिया-मिलियाके प्रकाशन-विभागकी लगभग दो-तीन लाखकी किताबें जल गयी थीं।

तीसरे पहर ता० १० अप्रैलकी मुलतवी चर्चा आगे चलाअी गयी। यह तय किया गया कि कांग्रेस राहत समिति श्री जाजूजीकी देखरेखमें अपने खर्चसे जल्दीसे जल्दी नमूनेके सौ मकान बँधवा दे। अिसके लिअे अेक लाखकी मंजूरी दी जाय। श्री जाजूजी स्थानीय कार्यकर्ताओंकी मददसे यह काम शुरू करेंगे।

शामको विनोबाजी श्रीमती मृदुलाबहन और गुड़गाँव जिलेमें मेव लोगोंके केन्द्रकी देखभाल करनेवाले अेक अफसरसे मिले।

(गुजरातीसे)

द० दा०

www.vinoba.in

बूड़िया जागीरमें विनोबा

[पूर्व पंजाबके अम्बाला जिलेमें जगाधरीके पास तीन मीलपर बूड़िया गाँव है। यह अेक छोटीसी जागीर है, जिसके जागीरदार टीकारतन अमोलसिंघ नामके अेक सिक्ख भाअी हैं। अिस जागीरमें बारह हजार मुसलमान थे। पिछले दंगोंमें बहुत सारे पाकिस्तान चले गये। लेकिन गांधीजीके खास प्रयत्नोंके कारण कुछ चार-पाँच हजार मुसलमानोंने हिन्दुस्तानमें ही रहनेका तय किया। लेकिन वे खुदको अंसुरक्षित समझते हैं। पश्चिम पंजाबसे भी कअी शरणार्थी अिस जागीरमें आकर बस गये हैं। खास बूड़ियामें तो कोअी तीन सौ मुसलमान हैं। बाकीके सहारनपुर जिलेकी सरहदपर पड़े हैं और वापिस बूड़ियामें आना चाहते हैं। बूड़ियाके मुसलमानोंके रक्षणके लिअे थोड़ीसी मिलिटरी भी वहाँ रखी गयी है। लेकिन अुसे हटानेका विचार चल रहा है। बूड़ियाके मुसलमानोंको धीरज देनेके हेतु तथा वहाँके हालात खुद देखनेके लिअे विनोबाजी २५-४-'४८ को बूड़िया गये थे। वहाँ जो आम सभा हुअी, अुसमें विनोबाजीने नीचेका भाषण दिया।—सं०]

अिस गाँवमें मैं खास अुद्देशसे आया हूँ। क्योंकि मैंने सुना था कि बूड़ियाकी अेक खास हालत है। पूर्व पंजाबके बहुत सारे मुसलमान पाकिस्तान चले गये हैं। अुधर गुड़गाँवकी तरफ कुछ मुसलमान बाकी हैं, और कुछ अिधर बूड़ियामें हैं। वे हैं तो थोड़ी तादादमें, लेकिन पाकिस्तानमें अुनके भेजनेका अिन्तजाम किये जानेपर भी अुन्होंने जाना पसंद नहीं किया और वे यहीं ठहर गये। यहाँ बूड़ियामें अुनकी रक्षाके लिअे कुछ मिलिटरी भी रखी गअी है। यह सारा हाल जब मैंने सुना, तब सोचा कि अिस गाँवमें आकर मुसलमान भाअियोंसे तथा यहाँ आये हुअे शरणार्थियोंसे मिलूँ, और दोनोंमें मुहब्बत बढ़ानेकी कोशिश करूँ।

यहाँ आकर मैं सब भाअियोंसे मिला, और अुनकी बातें सुनीं। यहाँ जो शरणार्थी पश्चिम पंजाबसे आये हैं, वे काफी दुःखी हैं। अुनको घर तो मिल गये हैं, लेकिन पश्चिम पंजाबमें वे जिस तरह रहते थे, वैसी व्यवस्था यहाँ नहीं हुअी है। जो मुसलमानभाअी यहाँ रह गये हैं, वे भी दुःखमें हैं। दो दुःखी मिल जाते हैं, तो दोनोंमें अेक दूसरेके प्रति हमदर्दी हो जाती है। कुंतीका किस्सा मशहूर है। जब भगवान अुसपर प्रसन्न हुअे और अुससे वर माँगनेको कहा, तो अुसने माँगा—"विपदः संतु नः शाश्वत्"—यानी मुझे हमेशा दुःख ही रहे। यह सुनकर भगवान बोले—"यह कैसा वर माँगती है?" तो कुंतीने कहा—"दुःख रहता है, तो दुःखियोंके प्रति हमदर्दी रहती है, और भगवानका निरंतर स्मरण रहता है। सुखमें मनुष्यका हृदय निठुर बनता है। वह भगवानको भूल जाता है।" लेकिन मैं देखता हूँ, यहाँ दोनोंके दुःखी होते हुअे भी हमदर्दी पैदा नहीं हो रही है। मुसलमानोंके दिलोंमें खौफ़ है कि मिलिटरी अुठ जायेगी, तो क्या होगा? यहाँ जो दूसरे भाअी रहते हैं, अुनके लिअे यह शरमकी बात है। हम जंगली जानवर थोड़े ही हैं कि दूसरोंको हमारा डर लगे? हमें तो अुन्हें विश्वास दिलाना चाहिये कि अगर अुनपर कोअी आफत आ जाये, तो हम बीचमें पड़ेंगे। हमारी जान पहले जायेगी, फिर अुनकी जायेगी। अैसा करेंगे, तो अुनमें विश्वास पैदा होगा।

वैसे मुसलमानोंको भी मैं कहूँगा कि डर छोड़ देना चाहिये। कुरानमें यह बात बार बार आयी है कि भगवान् पर जिसको भरोसा है, वह दुनियामें किसीसे डरता नहीं। भगवान् जब तक चाहता है तब तक मनुष्य अिस दुनियामें रहता है, और जब वह अुसको अुठा लेना चाहता है, तब वह अुठ जाता है। अीश्वरकी अिच्छाके बगैर पेड़की पत्ती भी नहीं हिलती। फिर डर काहेका?

मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप लोग यहाँ भाअी-भाअी जैसे रहिये। हिन्दुस्तानमें कुछ मुसलमान रहना पसंद करते हैं, तो यह हमारे लिअे अभिमानकी बात है। अिसीमें हमारे धर्मकी प्रतिष्ठा है। सब धर्मोंने यही कहा है कि आपसमें प्रेमसे रहो। अिन चन्द भाअियोंका जिम्मा अगर हम नहीं अुठाते हैं, तो हिन्दुस्तानके लिअे हमें जो करना चाहिये वह हम नहीं करते हैं, और सरकारकी ताकत कम करते हैं। यह सरकार हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अिसाअी वगैरा सब धर्मोंके लोगोंकी है, बशर्ते कि सब प्रेमसे रहें। सरकारकी मंशा सबको पूरी रक्षा देनेकी है। जो मुसलमान अपने घर छोड़ कर चले गये हैं, वे अगर अपने घरोंमें वापिस आ जायँगे, तो फिर हमारा क्या होगा, यह चिंता शरणार्थियोंको नहीं करनी चाहिये। सरकार सबकी चिंता करनेके लिअे समर्थ है। दोनोंके हितोंमें संघर्ष न पैदा हो, अैसी व्यवस्था सरकार कर सकती है और करेगी, यह मेरा विश्वास है।

आपके अिस छोटेसे गाँवमें आकर मुझे समाधान हुआ है। जहाँ जहाँ डर है, वहाँ जाकर मैं हिम्मत देना चाहता हूँ। हिम्मत तो अन्दरसे आनी चाहिये। लेकिन बाहरका निमित्त भी कभी कभी मददगार हो जाता है। अिसमें किसी पर मैं अहसान नहीं करता, बल्कि अपना कर्तव्य करता हूँ। यहाँके लोगोंका—मुसलमानोंको भी—टीकारतन अमोलसिंघ पर विश्वास देखकर मुझे आनन्द हुआ। अेक सिक्ख भाअी मुसलमानोंका विश्वास संपादन कर सके, यह अच्छा अुदाहरण है। अैसे दूसरे भी अुदाहरण हैं। कअी जगह हिन्दुओंने मुसलमानोंकी रक्षा की है और मुसलमानोंने हिन्दुओंकी। हिन्दुस्तानमें अैसे बनाव बनें, यही अुसकी अुन्नतिका आश्वासन है।

नअी दिल्ली, ३०-४-'४८ द० दा०

टिप्पणियाँ

बापू जो पंक्तियाँ बोले थे

पू० बापूके देहान्तके बाद अखबारोंमें यह बात छपी थी कि ता० २९ जनवरीकी रातको आराम करनेसे पहले कु० मनुबहन गांधीसे बातें करते हुअे वे अेक भजनकी कुछ पंक्तियाँ बोले थे। कअी भाअियोंने अिन पंक्तियोंके अलफ़ाज़ जानने चाहे हैं। कु० मनुबहनसे पूछनेपर, अुन्होंने बताया है कि "ता० २९ की रातको पू० बापूजी व्यायाम करके लेटे, और मैं अुन्हें तेलकी मालिश करने लगी, तब वे बोले—'आज मुझे बहुत अशान्ति मालूम हो रही है। लेकिन मुझे तो अशान्तिमेंसे शान्ति खोजना है। बाकी तो यह सब चार दिनका तमाशा है'—अैसा कहकर वे नीचेकी पंक्तियाँ बोले—

है बहारे बाग दुनिया चंद रोज़।
देख लो अिसका तमाशा चंद रोज़॥"

यह भजन आश्रम भजनावलीमें छपा हुआ है।

बम्बअी, १०-५-'४८
(गुजरातीसे) कि० मशरूवाला

'अिण्डियन ओपिनियन'के पुराने ग्राहकोंसे

जब गांधीजी 'अिण्डियन ओपिनियन' चलाते थे, अुस समयके अुसके अंकोंकी फाअिलोंमें गांधीजीकी जीवनीके लिअे अमूल्य सामग्री भरी है। लेकिन अब वे फाअिलें आसानीसे नहीं मिल रही हैं। अिसलिअे 'अिण्डियन ओपिनियन'के ग्राहकोंसे हमारी बिनती है कि वे अिन फाअिलोंको पानेमें हमारी मदद करें। जो फाअिलें हमें भेजी जायँगी, अुन सबकी कीमत दी जायगी। जो लोग अुस समयकी फाअिलें भेज सकें, वे मेहरबानी करके जीवणजी देसाअी, मेनेजर, नवजीवन कार्यालय, पो० बा० १०५, अहमदाबाद (हिन्दुस्तान) के पतेपर पत्रव्यवहार करें। जीवणजी देसाअी

विषय-सूची

		पृष्ठ
राजाजी	... किशोरलाल मशरूवाला	१०९
राजघाट पर श्री विनोबाका भाषण — ५	... द० दा०	१०९
मध्यप्रान्तकी अछूती छत्तीसगढ़की रियासतें	... अमृतलाल ठक्कर	११०
शिक्षाका माध्यम	... किशोरलाल मशरूवाला	११२
तामीरी संस्थाओंका सम्मेलन	... जे० सो० कुमारप्पा	११३
विनोबाकी यात्रा	... द० दा०	११३
बूड़िया जागीरमें विनोबा	... द० दा०	११५
टिप्पणियाँ :		११६
बापू जो पंक्तियाँ बोले थे	... कि० मशरूवाला	११६
'अिण्डियन ओपिनियन'के पुराने ग्राहकोंसे	... जीवणजी देसाअी	११६

www.vinoba.in